Jlimasiha: Pranopaniad
Lakhana, 1930 Seite 52

महाभूतों में स्थित है, वह राजा की तरह है वह अपनी प्रजारूपी जीव संयुक्त प्राणों पर अनुग्रह करता है, और तब ही जीव कार्य के करने में समर्थ होता है, जो कुछ विद्यमान है, सब प्राणों की ही विभूति है, इसीसे इसको अध्यात्म भी कहते हैं जो पुरुष पूर्वोक्त प्रकार करके प्राणों को जानता है, वह हिरण्यगर्भ की सायुज्यतारूपी मोक्ष को प्राप्त होता है, अर्थात् आत्मानन्द को प्राप्त होकर आवागमन से रहित हो जाता है ॥ १२ ॥

इति तृतीयः प्रश्नः ॥

मूलम् ।

अथ हैनं सौर्य्यायणो गार्ग्यः पप्रच्छ भगवन्नेतस्मिन् पुरुषे कानि स्वपन्ति कान्यस्मिन् जाग्रति कतर एष देवः स्वप्नान्पश्यति कस्यैतत् सुखं भवति कस्मिन् नु सर्वे संप्रतिष्ठिता भवन्तीति ॥ १ ॥

पदच्छेदः ।

अथ, ह, एनम्, सौर्यायणः, गार्ग्यः, पप्रच्छ, भगवन्, एतस्मिन्, पुरुषे, कानि, स्वपन्ति, कानि, अस्मिन्, जाग्रति, कतरः, एषः, देवः, स्वप्नान्, पश्यति, कस्य, एतत्, सुखम्, भवति, कस्मिन्, नु, सर्वे, सम्प्रतिष्ठिताः, भवन्ति, इति ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
अथ	तृतीय प्रश्न के पश्चात्	पप्रच्छ	प्रश्न करता भया
ह	प्रसिद्ध	किं	
एनम्	पिप्पलाद मुनि से	भगवन्	हे भगवन्
गार्ग्यः	गर्गगोत्र बिषे उत्पन्न हुआ	एतस्मिन्	इस
सौर्यायणः	सौर्यायण नामक ऋषि	पुरुषे	पुरुष बिषे
इति	ऐसा	कानि	कौन इन्द्रियां
		स्वपन्ति	सोती हैं अर्थात् स्वकार्य से रहित हो विश्राम करती हैं

UNIVERSITÄTS-BIBLIOTHEK HEIDELBERG
http://digi.ub.uni-heidelberg.de/diglit/jalimasimha1930/0060
© Universitätsbibliothek Heidelberg
gefördert durch die DFG